अतिमुक्त कुमार

पोलासपुर नगर के राजा विजय और रानी श्रीदेवी का पुत्र राजकुमार अतिमुक्त अत्यंत सुकुमार, सुन्दर बालक था। एक दिन प्रातः माता श्रीदेवी ने अपनी दुलार भरी बोली से बालक को जगाया—

और स्नान आदि से निवृत्त होकर अपने मित्रों के साथ महल से थोड़ी दूर मैदान में खेलने चला गया। खेलते-खेलते अचानक उसकी दृष्टि राजमार्ग पर भिक्षा के लिए एक घर से निकलकर दूसरे घर में जाते गौतम स्वामी पर पड़ी। उन्हें देखकर बालक अतिमुक्त के मन में जिज्ञासा उत्पन्न हुई—

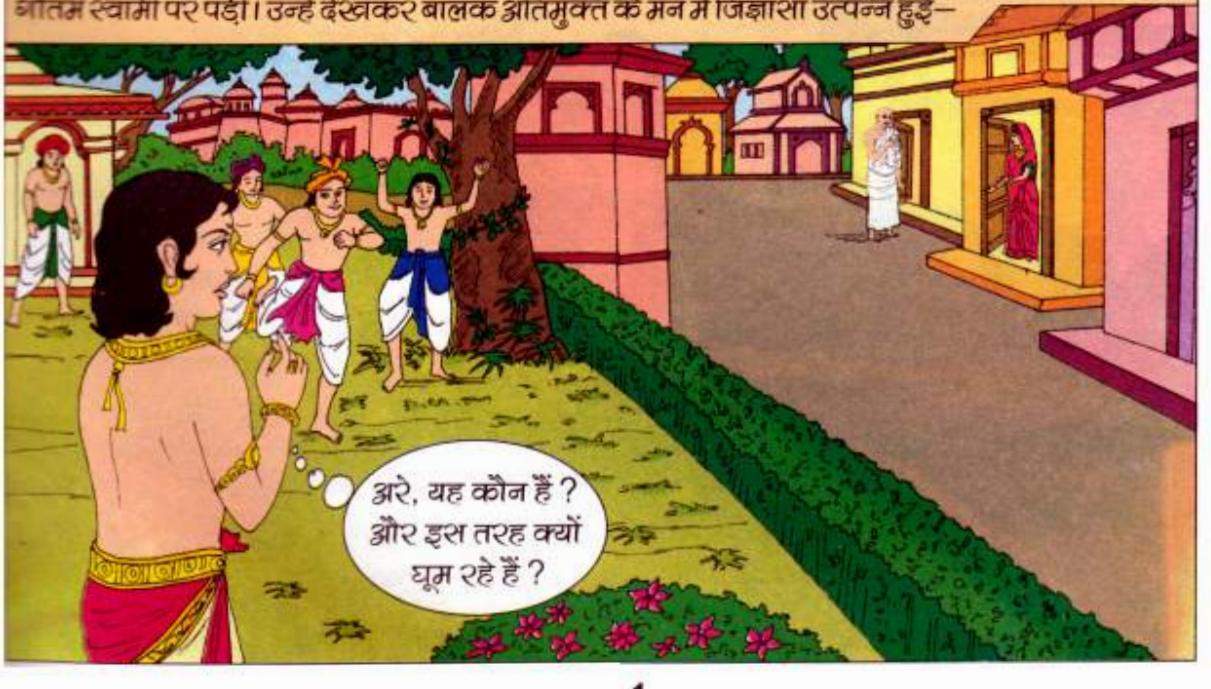

बालक दौड़ता हुआ शीघ्र ही उनके पास पहुँचा और बोला—

हे पूज्यवर ! आप कौन हैं और इस तरह घरों में क्यों घूम रहे हैं ?

वत्स ! हम श्रमण हैं और भिक्षा के लिये विचरण कर रहे हैं।

यह सुनकर बालक ने कहा—

अच्छा, तो ये बात है। आप मेरे घर पधारिये, वहाँ मेरी माता आपको बहुत-सा भोजन दे देंगी।

ऐसा कहकर अतिमुक्त कुमार ने गौतम स्वामी की उँगली पकड़ी और उन्हें लेकर राजमहल की ओर चल दिया। छोटे बालक का निश्चल प्रेम भरा आग्रह देखकर गौतम स्वामी भी उसके साथ चल दिये। रास्ते में बालक ने प्रश्न किया—

हे पूज्यवर ! आप भिक्षा क्यों माँगते हैं ?

बालक ! यह श्रमण धर्म है। हम ऊँचे-नीचे कुलों में घूमकर थोड़ा-थोड़ा निर्दोष आहार एकत्रित करते हैं और प्रभु महावीर के बताये संयम मार्ग पर चलते हैं।

इस प्रकार बातें करते-करते वे राजमहल के निकट पहुँच गये। दूर से माता श्रीदेवी ने अतिमुक्त कुमार को गौतम स्वामी की उँगली पकड़े महल की तरफ आते देखा तो मुग्ध हो उठीं। वे तुरन्त द्वार पर आईं और गौतम स्वामी को वन्दन-नमन किया—

माता ने मुनिश्री को गोचरी बोहरा दी।

गौतम स्वामी ने अपनी मर्यादा से भोजन आदि लिया और लौटने लगे। बालक ने पूछा—

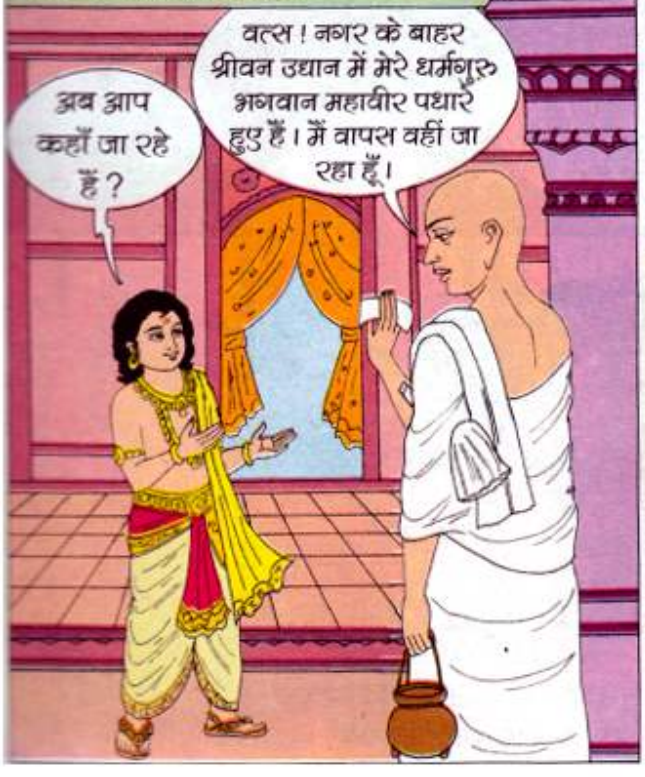

गौतम स्वामी की स्वीकृति पाकर अतिमुक्त कुमार भी भगवान के दर्शन करने चल दिया।